शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 14
Issue 1&2
151July 2023

डॉ. यायावर की 'सजलों' में नवगीत के तत्व

बीज शब्द :

नवाचार, तथ्यान्वेषण, प्रतिष्ठा, मौलिक चिंतन, लोकाभिव्यक्ति, सजल, गजल

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' मूल रूप से नवगीतकार हैं। यही कारण है कि डॉ. यायावर जी द्वारा सृजित प्रत्येक विधा में नवगीत के तत्वों को सहज ही खोजा जा सकता है। एक कटु यथार्थ यह भी है कि जो व्यक्ति जिस क्षेत्र विशेष में महारत रखता है, तो उसका प्रभाव उस व्यक्ति विशेष द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य पर अवश्य ही परिलक्षित होता है।परिणामस्वरूप डॉ. यायावर जी की प्रत्येक काव्यात्मक रचना में नवगीत के तत्व विराजमान रहते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में डॉ. यायावर जी की प्रथम सजल कृति 'तृषा का आचमन' तथा द्वितीय सजल कृति 'जलती रेत : दहकता मरुथल' में भी नवगीत के तत्व विराजमान हैं।

*****

कृष्ण कुमार यादव (मुख्य सचिव, हिंदी शोधार्थी संघ, भारत)
शोध-निदेशक, डॉ. संध्या द्विवेदी, हिंदी-विभाग, एम.जी.बी.वी.पी.जी. कॉलेज, डॉ.बी.आर.ए.यू., आगरा

डॉ. यायावर की 'सजलों' में नवगीत के तत्व

गीत, नवगीत और सजल, ये तीनों ही विधाएं काव्य के क्रमिक विकास एवं विकास क्रम के विस्तार-पथ की अनुगामिनी विधाओं के रूप में दृष्टिगत हैं। जहां एक ओर गीत मानवीय संवेदना के आदि इतिहास से संबद्ध है, वहीं नवगीत में वर्तमान की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मानव मूल्य, मानवीय संवेदना, सामाजिक विषमताओं व विद्रूपताओं, मौलिक यथार्थ की अभिप्रेरणा, वैश्विक चिंतन, सर्वव्यापी सरोकार तथा मानव मात्र के कल्याण की भावना तथा गीत के नवीन शिल्प सौंदर्य की नवता के तत्वों जैसे भाव, भाषा, कथ्य आदि के नवत्व को धारण कर उस मानसिक वक्रता को प्रतिहत किया जिसका मंतव्य यह हुआ करता था कि गीत कभी भी उस वैचारिक पृष्ठभूमि पर नहीं स्थापित हो सकता जिस पर नई कविता उतर कर सोचती है। इस दौर में जहां नई कविता के आतंक ने गीत को कविता की श्रेणी से बाहर करने का कुप्रयास किया, वहीं नवगीत ने अपनी सामर्थ्य के बल पर गीत की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया। इसी क्रम में जब उर्दू की प्राचीन विधा गजल हिंदी कवियों के मन-मस्तिष्क पर इस प्रकार प्रभावी हुई कि हिंदी कवि अपनी स्वयं की प्रतिष्ठा को खूंटी पर टांग कर गजल के सृजन के नाम पर अपमानित होते रहने पर भी स्वयं को गौरवान्वित ही अनुभव करते दृष्टिगत हुए; तब बलवीर सिंह 'रंग', दुष्यंत कुमार, शिशुपाल सिंह 'निध ‍न' जैसे महनीय कवियों ने अपने स्वाभिमान को जीवित रखते हुए हिंदी गजलों का सृजन किया। यहां ध्यातव्य तथ्य यह भी है कि वे अपनी रचनाओं को 'गजल' न कहकर 'गजल' यानी कि नुक्ता विहीन ही रखते थे, अर्थात् इन कवियों ने प्रथमतया तो नाम का ही हिंदीकरण किया। इस क्रम में कालांतर में गीतिका, मुक्तिका, नागरी गजल, तेवरी आदि कई नाम आए किंतु यहां केवल नामों का ही परिवर्तन हुआ, परंतु शिल्प-विधान में कोई प्रामाणिक अंतर स्थापित न हो सका। परिणामस्वरूप हिंदी के एक से एक धुरंधर गजलकारों पर उर्दू उस्तादों की नकचढ़ी जस की तस बनी रही। कुछ एक हिंदी कवियों ने अपने नाम का इस्लामीकरण करके अवश्य ही प्रतिष्ठा पा ली किंतु अपने मूल नाम के साथ कोई भी हिंदी का गजलकार स्वयं को गजलकार के रूप में स्थापित न कर सका; ऐसे में गजल के आकर्षण व उस के स्वरूप बंध के समानांतर वर्ष 2016 में विकसित हुई हिंदी की मौलिक विधा 'सजल' ने इस भ्रम को तोड़ा कि गजल के लावण्य को हिंदी में लाना संभव नहीं है। यहां यह भी ध्यातव्य है कि जब भारतेंदु हरिश्चंद्र जी अपने युग में काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली हिंदी का पक्ष रख रहे थे, उस समय भी अनेकानेक विद्वानों का यही मत था कि खड़ी बोली में वह लावण्य कभी नहीं आ सकता जोकि ब्रजभाषा में है किंतु कालांतर में यह भ्रम भी टूटा। वर्तमान समय में कोई भी ऐसा पारंपरिक छंद नहीं जो खड़ी बोली हिंदी में अपनी पूरी गरिमा के साथ न आया हो। इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध गीतकार स्व. श्री देवल आशीष जी का एक कवित्त छंद दृष्टिगत है-

प्यार के बिना भी उम्र काट लोगे मित्र किंतु,
कहीं तो अधूरी जिंदगानी रह जाएगी।
यानी रह जाएगी न मन में उमंग न तो,
देह में सनेह की निशानी रह जाएगी।
रह जाएगी तो बस नाम की नहीं तो फिर,
और किस काम की जवानी रह जाएगी।
यानी रह जाएगी उमंग न तरंग न,
कबीर-सी चदरिया पुरानी रह जाएगी।

उपर्युक्त छंद खड़ी बोली हिंदी का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार 'सजल' विधा की रचनाएं भी अपने यौवन की ओर शीघ्रातिशीघ्र अग्रसर हो रही हैं। इस परिप्रेक्ष्य में एक सजलकार के रूप में डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी की प्रथम एकल कृति 'तृषा का आचमन' तथा द्वितीय कृति जलती रेत : दहकता मरुथल' प्रकाशित हुई हैं। डॉ. यायावर की सजलों में नवगीत के वे सभी तत्व उपस्थित हैं, जिनके कारण नवगीत की अपनी साहित्यिक प्रतिष्ठा है।

नवगीत को विशेष रूप से हमारे देश के तात्कालिक परिवेश तथा परिस्थितिजन्य स्थितियों के परिणाम के रूप में स्वीकार किया गया है। हिंदी साहित्य के अनेक युगों तथा आंदोलनों की भांति ही नवगीत अपने नाम से ही पूरी काव्य - ध ारा के मौलिक स्वरूप को स्पष्टता प्रदान नहीं करता बल्कि वह तो केवल संकेत मात्र ही करता है। वास्तविकता में तो नवगीत को मूल रूप से गीत के स्वरूप में ही स्वीकार करना होगा। क्योंकि जिस प्रकार गीत में लय और छंद उसके अस्तित्व के अनिवार्य तत्व हैं, ठीक उसी प्रकार नवगीत में भी इन दोनों की उपस्थिति उतनी ही अनिवार्य है। यह बात भिन्न है कि नवगीत संगीत की रूढ़ तथा कठोर शास्त्रीय परिपाटी के साथ दृढ़ता से आबद्ध नहीं है। परंतु ध्यातव्य तथ्य यह भी है कि नवगीत किसी अवास्तविक अर्थलय में अपना विश्वास प्रकट नहीं करता।

नवगीत आधुनिकता तथा युग-बोध की एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसे युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में बड़ी ही स्पष्टता और सहजता से पहचाना जा सकता है। नवगीत के प्रतिस्थापन व उत्थान के संदर्भ में 'पांच जोड़ बांसुरी' नवगीत संकलन के संपादक चंद्रदेव सिंह लिखते हैं - 'नई कविता के समर्थकों ने गीत पर इसलिए भी बार-बार आक्रमण कर उसे पुराना, घिसा-पिटा और पिछड़ा कहा, ताकि हिंदी कविता को नई दृष्टि दे सकें; जो वैज्ञानिक चेतना को आत्मसात कर सके, ताकि छंद, लय, गेयता, रागात्मकता से कविता को मुक्ति दिला सकें, जिससे वह आधुनिक जीवन-बोध को यथार्थ रूप में व्यक्त करने की शक्ति से भरपूर हो उठे। आधुनिक युगबोध की उपलब्धि, अनास्था, कुंठा, पराजय, विघटन का प्रकटीकरण गीत के माध्यम से संभव हो सकेगा'-१ यहां स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि भले ही नई कविता के समर्थक यह मानते हैं कि गीत में वह क्षमता नहीं जो नई कविता में है, किंतु वास्तविकता में गीत उन सभी तथ्यों को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकता है, जिनके लिए विशेष रूप से नई कविता जैसी विधा विशेष को विशिष्ट माना जाता है।

नवगीत के उदय की संभावित परिस्थितियों पर विचार करते हुए सुप्रसिद्ध समालोचक आचार्य श्री नरेश शाण्डिल्य जी लिखते हैं - "कविता में जैसे महाकवि निराला ने छंद को तोड़ा और एक नए छंद की उत्पत्ति की - 'मुक्त छंद', ये कदापि 'छंद मुक्त' नहीं था, जैसा कि कुछ कवियों ने उसे बना दिया। ठीक उसी प्रकार 'नवगीत' की विधा सामने आई। इसमें नए-नए विमर्शों, नए-नए प्रतीकों, नए-नए बिंब-विधानों की उत्पत्ति और उनका विकास हुआ। पारंपरिक गीतों में अधिकतर प्रेम गीत और श्रृंगार गीत रचे जाते थे, जिनमें सौंदर्य, अलंकार, छायावाद आदि-आदि का बोलबाला था। इसी के समानांतर (विरोध में नहीं) नवगीत विधा का प्रादुर्भाव हुआ। नवगीत में यथार्थ, सामाजिकता, विचार और समष्टिवाद को तरजीह दी गई। भाव और विचारों का सामंजस्य पैदा किया गया"-२ यहां लेखक का आशय यह है कि 'नवगीत' वास्तविकता में गीत का ही विकसित स्वरूप है जिसने अपने भीतर उन सभी महनीय तथ्यों को समाहित किया, जिनके माध्यम से साहित्य को आधुनिक समाज की मूलभूत संरचना के लिए उपयोगी सिद्ध किया जा सके। इस प्रकार नवगीत एक ऐसे विकल्प के रूप में सामने आया, जो गीत की उपादेयता को बनाए रखते हुए साहित्य जगत् में अपनी उपस्थिति की अनिवार्यता का साधन सिद्ध हुआ।

नवगीत एकादश नामक कृति में संकलित ग्यारह नवगीतकारों में सबसे पहले क्रम पर प्रकाशित जगदीश श्रीवास्तव जी के वक्तव्य में नवगीत के संदर्भ में कहा गया है कि,नवगीत भीड़ भरे सूनेपन की ईमानदार अभिव्यक्ति है। वह कल्पना के पंख लगाकर हवा में नहीं उड़ाता, वह धूप तपी नंगी चट्टानों पर नंगे पांव चलता है। माटी की गंध, ग्रामीण परिवेश, खपरैलों से निकलता धुआं, बादलों की परछाइयां, मौसम के बदलते रंग, महानगरों का संत्रास व मानवीय संवेदनाओं ने नए छंदों, नए प्रतीकों व बिंबों से नवगीत को नवचेतना से संवारकर, गीतों की धारा को मन की गहराई तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। बदलते परिवेश में शाश्वत मूल्यों को भाषा की रोचकता से संजोया व संवारा है। नवगीत के शिल्प में जहां बिंब व प्रतीकों का प्रयोग हुआ है और जिनमें अंतर्वर्त्ती लय का समावेश है, उन गीतों में ही सशक्त अभिव्यक्ति प्रस्फुटित होती है।"-३ अर्थात् गीत जब राष्ट्र व समाज की मूलभूत अवधारणा के सापेक्ष खड़ा होकर अपनी बात अपने नवीनतम स्वरूप में प्रस्तुत करता है, तो वह नवगीत कहलाता है। इसी संदर्भ को व्याख्यायित करते हुए डॉ. शंभुनाथ सिंह जी 'नवगीत अर्द्धशती' नामक नवगीत संकलन की भूमिका में "नवगीत विकास यात्रा" शीर्षक में लिखते हैं - "नवगीत किसी अंग्रेजी शब्द का अनुवाद है या कि अंग्रेजी के किसी काव्यांदोलन या काव्य प्रवृत्ति का अनुकरण है, ऐसा नहीं माना जा सकता। निष्कर्ष यह है कि नवगीत नई कविता की तरह पश्चिम से आयातित काव्य प्रवृत्ति नहीं है, न तो वह हिंदी की नई कविता के वजन पर गढ़ा हुआ शब्द है। नई कविता के प्रारंभ से बहुत पहले ही नए ढंग से गीतों की रचना प्रारंभ हो गई थी, उसका नामकरण 'नवगीत' भले ही बाद में हुआ। नवगीत भारतेंदु युग से चली आती उस गीत परंपरा की संज्ञा है, जो प्रारंभ से ही लोक जीवन से संपृक्त थी और युगीनबोध से उत्तरोत्तर परिपुष्ट होती रही।"-४ इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि नवगीत समय की धारा में प्रवाहित होते हुए गीत का नया स्वरूप है, जो वर्तमान समय की मांग को पूरा करने में पूरी तरह से समर्थ, सक्षम तथा सशक्त है।

इस प्रकार नवगीत के आचार्यों के मंतव्यों की विवेचना के पश्चात् ज्ञात होता है कि हिंदी साहित्य में गीत का वह नवीनतम स्वरूप नवगीत है, जो सामाजिक जीवन के यथार्थ, मानवीय मूल्यों व संवेदनाओं, राष्ट्रीय वैचारिकी, वैश्विक चिंतन, सर्वव्यापी सरोकार, वैयक्तिक प्रोन्नति, सामाजिक विकृतियों व विसंगतियों आदि को नवीन बिंबों व प्रतीकों के माध्यम से नवीन शिल्प व लयात्मक स्वरूप में अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार इस

संपूर्ण अवलोकन के पश्चात् ज्ञात होता है कि नवगीत के महनीय तत्वों के रूप में नवीन बिंब, नवीन प्रतीक, नवीन वैचारिकी, नवीन सामाजिक चिंतन, सामाजिक विकृतियों तथा विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण आदि को प्रमुखता से स्थान प्राप्त हुआ है। इस आधार पर यदि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी की सजलों का मूल्यांकन किया जाए तो उनकी सजलों में ये सभी नवगीत के प्रमुख तत्व सहज ही खोजे जा सकते हैं।

सजल के संबंध में अपनी आलोचनात्मक कृति ष्तीसरी आंख और सजल" में युवा कवि एवं सुप्रसिद्ध साहित्यालोचक कृष्ण कुमार 'कनक' लिखते हैं - "सजल हिंदी साहित्य की गीतिकाव्य-धारा की नवीन विधा है, जोकि उर्दू की गजल के समकक्ष कही जा सकती है; उर्दू गजल से प्रभावित या उससे उत्पन्न नहीं। इस विधा के प्रस्तोता आचार्य डॉ. अनिल गहलोत हैं। वे एक व्हाट्सएप ग्रुप पर थे, जिसका नाम था, 'गजल है जिंदगी'। उस ग्रुप पर लोग गजल के समान ही देवनागरी लिपि में रचनाएं करते थे। कुछ गजलें तो पूरी तरह से गजल के व्याकरण तथा मानकों पर खड़ी उतरती थीं; बस उनकी विशेषता यह होती थी कि वे नागरी लिपि में थी, शेष रचनाएं वे थीं, जिन्हें 'पूर्णिका' कहा जाना ही उचित और समीचीन है। गहलोत जी को गजल के व्याकरण का अच्छा ज्ञान था और उनके देवनागरी लिपि में लिखी हुई शुद्ध उर्दू गजलों के दो संकलन भी प्रकाशित हो चुके थे। गजल के ज्ञाता विद्वान होने के कारण गहलोत जी का उस समूह के सभी सदस्यों पर अच्छा-खासा प्रभाव भी था। अगस्त 2016 में एक दिन उस समूह पटल पर किसी ने 'हिंदी दिवस' पर चर्चा छेड़ दी, तो उस समूह के अन्य विद्वानों ने भी उत्साह से उस चर्चा में भाग लिया और चर्चा बढ़ते हुए गजल तक आ पहुंची। डॉ. अनिल गहलोत ने तभी प्रस्ताव रखा कि क्यों न हम हिंदी में किसी ऐसी विधा का विकास करें, जो गजल के समकक्ष हो, उसका अपना व्याकरण, शिल्प, भाषा और विधान हो; जोकि हिंदी कवियों को गजल के आकर्षण से बचा सके, साथ ही अपनी मौलिकता के लिए हिंदी साहित्य जगत् में सम्मानजनक स्थान भी प्राप्त कर सके। गहलोत जी के इस विचार ने हिंदी के विद्वानों और कवियों तथा समीक्षकों में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया, साथ ही सबकी निगाहें उन्हीं पर आकर टिकीं। एक दिन, दो दिन या फिर चार-छः दिन नहीं, बल्कि पूरे एक माह तक विचार-मंथन चला। एक माह के सघन विचार-मंथन के उपरांत सहमति बनी 'सजल' विधा के नाम पर तथा 'सजल' के अंग-उपांगों के हिंदी नाम पर सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। 'सजल' की भाषा, व्याकरण और शिल्प के मानक भी सुनिश्चित किए गए। उसके उपरांत 5 सितंबर 2016 को उस ग्रुप पर 'सजल' विधा के हिंदी साहित्य में पदार्पण की घोषणा की गई और ग्रुप का नाम बदलकर 'सजल सर्जना' कर दिया गया। 'सजल' विधा के उद्भव के संदर्भ में डॉ. महेश दिवाकर 'डी.लिट.' लिखते हैं - डॉ. अनिल गहलोत जी के राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, हिंदी के प्रति उनके समर्पण और भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी सुनिष्ठु प्रज्ञा ने 'सजल' जैसी हिंदी गीतिकाव्य की इस नई विधा को संज्ञानित किया। अपनी इस शाश्वत संकल्पना के मूल में डॉ. अनिल गहलोत ने 'सजल' के रूप-बंध को लेकर भाषा और शिल्प के स्तर पर नवीन मौलिक प्रस्थापनाएं कीं हैं। सजल को विशुद्ध रूप से हिंदी काव्य की विधा मानते हुए उन्होंने इसे दोहा और मुक्तक की सहगोत्री बताया है, साथ ही हिंदी की नई कविता और नवगीत की भांति ही इसे भी स्वतंत्र विधा माना है।"-५ इस लेखांश में 'पूर्णिका' शब्द का प्रयोग हुआ है, उसे समझना भी परम आवश्यक है क्योंकि एक बड़ा प्रश्न यह उठा कि जो रचनाएं उर्दू गजल के मानकों पर खरी उतरती हैं वे तो उर्दू गजल कहलाएंगी और जो सजल के मानकों पर खरी उतरती हैं वे सजल; किंतु इस पूरे कालखंड में इन दोनों के गुणों को लिए हुए जो रचनाएं हुईं उन्हें क्या माना जाए? या फिर ऐसी रचनाएं जो गजल और सजल दोनों के गुणों से युक्त होंगी, वे क्या कहलाएंगी? तो इस प्रश्न के सहज उत्तर की खोज डॉ. सलफनाथ यादव 'प्रेम' जी ने की। उन्होंने कहा कि जो रचनाएं न तो पूरी तरह से गजल हैं और न पूरी तरह से सजल, किंतु वे काव्यमय एवं स्वयं में पूर्ण रचनाएं तो हैं ही; अतः उन्हें 'पूर्णिका' कहा जाना चाहिए। डॉ. सलफनाथ यादव 'प्रेम' जी का यह कथन इस दृष्टि से भी उचित है कि इस प्रकार की रचनाओं को हिंदी गजल, गीतिका, मुक्तिका, तेरी, नागरी गजल आदि अनेक नाम दिए गए किंतु उनका कोई सुनिश्चित व्याकरण न होने के कारण उन्हें विधा के रूप में स्वीकार किया जाना संभव न हो सका। अतः 'इन रचनाओं के लिए 'पूर्णिका' शब्द का प्रयोग अधिक समीचीन है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि 'सजल' हिंदी गीतिकाव्य परंपरा में सम्मिलित होने वाली एक ऐसी नवीन विधा है, जिसका विकास हिंदी के द्विपंक्तिक पारंपरिक छंदों से हुआ है। इस विधा के विकास का मूल उद्देश्य हिंदी कवियों को उर्दू गजल के आकर्षण से बाहर निकालने के साथ ही हिंदी में उर्दू गजल के समानांतर एक ऐसी विधा की स्थापना करना है, जो देवनागरी लिपि के मानक स्वरूप का संरक्षण करे और हिंदी भाषा के प्रचलित स्वरूप के प्रयोग से पाठक को वही आनंद प्रदान करे,

जिसकी खोज में वह उर्दू गजल की ओर आकर्षित होता है। यहां यह बात भी समझ लेना आवश्यक है कि 'सजल' का उद्देश्य यह नहीं कि उर्दू या किसी अन्य भाषा का विरोध किया जाए, अपितु हिंदी भाषा की मौलिकता को संरक्षित करने के सद्प्रयास का नाम ही 'सजल' है। अर्थात 'सजल' के माध्यम से यह कहने का प्रयास नहीं किया गया है कि 'सजल' में उर्दू अथवा अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग पूरी तरह से वर्जित कर देना ही अनिवार्य है, अपितु यह निवेदन किया गया है कि जब तक हिंदी शब्दकोश में आपके भावों को प्रकट करने हेतु सटीक शब्दों का अभाव न हो तब तक आप किसी अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग सायास कदापि न करें। अर्थात् 'सजल' में हिंदी भाषा के प्रचलित स्वरूप को स्वीकार्यता प्रदान की गई है, किंतु अनावश्यक रूप से किसी अन्य भाषा के शब्दों के प्रयोग की वर्जना है। इस प्रकार स्पष्ट है कि 'सजल' विधा हिंदी भाषा तथा व्याकरण दोनों की संपोषक है।

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी उन सजलकारों में से हैं, जिनके एकल सजल-संग्रह सबसे पहले प्रकाशित हुए। डॉ. यायावर जी के अब तक दो सजल-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, 1- तृषा का आचमन, 2- जलती रेत : दहकता मरुथल। इन कृतियों में से 'तृषा का आचमन' कृति को सजल विधा के प्रथम एकल संग्रह के रूप में स्वीकार किया गया। डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी की सजलों में नवगीत के वे सभी तत्व विराजमान हैं, जो नवगीत विधा के मूल तत्व हैं। इन तत्वों को डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी की सजलों में अनेक स्थलों पर देखा जा सकता है।

नवगीत का सबसे प्रमुख तत्व है, यथार्थ चित्रण। इस बिंदु पर विमर्श करने से ज्ञात होता है कि साहित्य में जिस आदर्शवाद को चित्रित किया जाता रहा है, वास्तविकता में धरातल पर वैसा सामाजिक स्वरूप होता नहीं है; यानी कि धरातल का यथार्थ साहित्य के कल्पित आदर्शवाद से भिन्न पाया जाता है जोकि सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार का है किंतु समाज में व्याप्त विकृतियां इतनी अधिक हैं कि यहां सकारात्मक यथार्थ की मात्रा नगण्य-सी प्रतीत होती है। इस वास्तविक यथार्थ को नवगीतों के महत्वपूर्ण तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है। इस दृष्टि से यदि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी की सजलों को देखा जाय तो ज्ञात होगा कि इन सजलों में सजलकार ने वास्तविक यथार्थ को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। यायावर जी की एक सजल के कुछ पदिक दृष्टव्य हैं- इस युग में किरदार की बातें।
मत सोचो बेकार की बातें।।
हत्या, चोरी, लूट, अपहरण।
रोज यही अखबार की बातें।।
चारा, चीनी, कोल घोटाले।
बहुत बड़ी सरकार की बातें।।"-६

यहां सजलकार मानवीय संवेदनाओं और भारतीय राजनीति के बिगड़ते स्वरूप और उसके भोंड़े यथार्थ को स्पष्ट स्वर देता हुआ दृष्टिगत हुआ है। निःसंदेह वर्तमान समय में मानव मूल्यों का ह्रास इस कदर हुआ है कि किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि सजलकार कहता है कि इस युग में किरदार यानी कि व्यक्तित्व के सापेक्ष उसके आचरण की अपेक्षा तक बेमानी लगने लगी है। सच तो यह है कि इस प्रकार की बातें करना भी अब मात्र समय की बर्बादी ही है। जहां गांव के प्रधान से लेकर देश के सर्वोच्च पदों तक के सभी आला अधिकारी, कर्मचारी और जन प्रतिनिधि पहले अपना कमीशन तय करते हैं उसके बाद ही फाइल साइन करते हैं। प्रधान और प्रधानाचार्य मिलकर मिड-डे-मील खा जाते हैं, आंगनवाड़ी की पंजीरी भैंसों के लिए बेच दी जाती है, सभासद और पार्षद गली-खडंजे खा जाते हैं, महापौर नाले-नालियां खा जाता है, विधायक-सांसद हाई-वे खा जाते हैं। प्राचार्य पांच रुपये की कांच की परखनली को पांच सौ रुपये में खरीदकर बच्चों की प्रयोगशाला खा जाते है और फिर भी जो कुछ बच भी जाता है उसे सरकारी कर्मचारी नामक दीमक चुन लेती है। वर्तमान के इसी यथार्थ को सजलकार ने बड़े सहज ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। आज का मीडिया भी बस उतना ही छापता है, जितना कि उसके स्वयं के स्वास्थ्य के अनुकूल हो। एक यथार्थ यह भी है कि आज के समय में लोगों के घरों में या तो बचपन दिखाई देता है या फिर बुढ़ापा; जवानी की हालत यह है कि या तो वह गरीबी और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ चुकी है, या अपनी आजीविका की खोज में किसी महानगर की तंग गलियों में कोचिंग-कोचिंग खेल रही है, या दो जून की रोटी कमाने के लिए मत्था फोड़ रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में एक पदिक और देखें-
"बचपन ढ़ला बुढ़ापे में।
खोई किधर जवानी बोल।।"-७
भारतीय राजनीति के एक कड़वे यथार्थ को स्वर देता एक पदिक और देखें-
"वर्षों पहले जिनको जिला बदर हो जाना था।
"आज वही बैठे हैं घर में बनकर बड़ी बुआ।।"-८

भारतीय राजनीति का एक दुर्दांत सत्य यह भी है कि यहां नेता वही बनता है, जो लुटेरों का सरदार है। इसका प्रमुख

कारण यह है कि जनता में सौ में से पिच्यानवें ऐसे हैं जिनमें छोड़ भलाई सब गुण हैं, और फिर बचे पांच भले लोग; तो सोचने वाली बात है कि उन पांच प्रतिशत लोगों में से कोई चुनाव लड़कर जीतेगा भी कैसे? यानी कि बात वहीं आ गई घूम फिरकर; जो जितना बड़ा गुंडा वह उतना बड़ा नेता।

इस प्रकार डॉ. यायावर जी की सजलों में उच्च कोटि के यथार्थ-बोध का दर्शन होता है।

नवगीत के एक महनीय तत्व के रूप में मानव मूल्य, पारिवारिक व मानवीय संवेदनाओं को भी माना गया है। इस दृष्टि से भी डॉ. यायावर जी की सजलें नवगीत के बेहद करीब कही जा सकती हैं। एक पदिक देखें -

"फांसी देकर निरपराध को मुक्त कर दिया अपराधी को।
बोला न्यायधीश कि अब यह न्याय पूर्ण निष्पक्ष हो गया।।"-९

मानवीय संवेदनाओं का ह्रास इस प्रकार हुआ है कि जहां एक ओर जनता सर्वाधिक विश्वास न्यायालयों पर करते हुए यह विचार करती है कि न्यायालय में उसे न्याय अवश्य ही मिलेगा किंतु संवेदन हीन न्यायधीश भी अब बड़ी बेशर्मी से धन के लालच या सत्ताओं के दबाव में निरपराधों को सजा सुनाने में नहीं हिचकते। समय के साथ एकल परिवारों में मरती पारिवारिक संवेदनाओं को उजागर करते हुए दो पदिक देखें -

"बेंच दी बाबा की फोटो आज उसने हाट में।
पुत्र इस दीवार पर अब पेंटिंग लटकाएगा।।
हो गया बूढ़ा चलेगी अब कुल्हाड़ी देखिए।
फलसफा दुनियां का यह गिरता सजर बतलाएगा।"- १०

पारिवारिक विघटन से उत्पन्न एकल परिवारों में अपने पूर्वजों के प्रति जो आधुनिक पीढ़ी की संवेदना घटी है, उसी का परिणाम है कि आज दीवारों पर रंग-बिरंगी चित्रकारियां तो आसानी से मिल जाती हैं, किंतु घर के बुजुर्गों के चित्र दिखाई नहीं देते।

आधुनिक परिवारों की स्थिति यह है कि घर के बुजुर्ग इतने अकेले हो गए हैं कि उन्हें प्रत्येक क्षण का जीवन एक कठिन घड़ी-सा प्रतीत होने लगा है।

नवगीत की प्रमुख विशेषताओं में से एक विशेषता नवीन बिंब-विधान भी है। इस दृष्टि से भी डॉ. यायावर जी की सजलें नवगीतनुमा ही हैं। संश्लिष्ट बिंब का एक पदिक देखें -

"अब न घूंघट न पनघट न धीमी हंसी।
खो गया है कहीं लाज का आभरण।।"-११

उपर्युक्त पदिक के प्रथम पल्लव में घूंघट और पनघट दृश्य बिंब हैं, धीमी हंसी श्रव्य बिंब है तथा द्वितीय पल्लव में लज्जा के भाव की उपस्थिति के कारण भाव बिंब है। इस प्रकार संपूर्ण पदिक में दो से अधिक बिंब होने के कारण संश्लिष्ट बिंब है।

इसी प्रकार एक पदिक के द्वितीय पल्लव में श्रव्य बिंब का उदाहरण देखें-

"फिर किसी कुंज में बज उठी बांसुरी।।"-१२

यहां बांसुरी के बजने की ध्वनि का आस्वादन कान के माध्यम से होने के कारण श्रव्य बिंब है।

इसी प्रकार स्पर्श्य/त्वक बिंब का एक उदाहरण देखें-

'दहकी आग चिनारों में।
घाटी है अंगारों में।।'-१३

उपर्युक्त पदिक में आग के दहकने की अनुभूति त्वचा के माध्यम से होगा अतः यहां स्पर्श्य/त्वक बिंब है।

उपर्युक्त उदाहरणों पर दृष्टिपात करने पर स्पष्ट है कि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर जी की सजलों में विविध प्रकार के नवीन बिंब उपस्थित हैं, जो कि उनकी सजलों को नवगीत के सापेक्ष खड़ा करने में पूर्ण रूपेण सक्षम हैं।

नवीन प्रतीकों का प्रयोग भी नवगीत का एक महत्वपूर्ण तत्व है। इस दृष्टि से डॉ. यायावर जी की सजलों को देखें, तो इन सजलों में भरपूर मात्रा में नवीन प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए एक सजल के कुछ पदिक दृष्टव्य हैं-

"कंचन कुर्सी वाले सब।
तन मन धन के काले सब।।
भोलापन आंखों में है।
मन में तीखे भाले सब।।"- १४

उपर्युक्त पदिकों में कंचन कुर्सी वाले वर्तमान नेताओं का प्रतीक है और तीखे भाले आधुनिक मानव की कुत्सित मानसिकता का प्रतीक। इसी प्रकार नवीन प्रतीकों से परिपूर्ण एक पदिक और दृष्टव्य है -

"सूर्य - चंद्र तक हार मान लेते हैं तम से कभी-कभी।
जीत न पाया अंधकार दीपक की नन्ही जान से।।"-१५

यहां सूर्य और चंद्रमा को भले मनुष्यों के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है, वहीं दीपक को एक दृढ़ संकल्पित वीर योद्धा यानी कि भारतीय सीमाओं की रक्षा में तैनात एक सैनिक के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है, जो अपनी अंतिम श्वास तक दुश्मन को अपनी सीमा में प्रवेश नहीं करने देता।

उपर्युक्त पदिकों के माध्यम से स्पष्ट है कि जिस प्रकार नवगीत में नवीन प्रतीकों का स्थान महत्वपूर्ण है उसी प्रकार डॉ.

यायावर जी की सजलें भी नवीन प्रतीकों के प्रयोग से परिपूर्ण दिखाई देती हैं। तदुपरांत नवगीत की एक अन्य प्रमुख विशेषता नवीन छंद और नवीन लय विधान की है, तो इस दृष्टि से भी डॉ. यायावर जी की सजलें नवगीत के समक्ष ही हैं क्योंकि इनका शिल्प विधान बहुत सीमा तक नवगीत के विधान के समीपस्थ है। तथापि सजल का अपना अलग-अलग शिल्प विधान है, अतः इन सजलों को नवगीत तो नहीं कहा जा सकता; किंतु यह अवश्य ही स्पष्ट है कि डॉ. यायावर की सजलों में नवगीत के प्रमुख तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

निष्कर्षः- नवगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास क्रम, भाव तथा कला पक्ष पर दृष्टिपात करते हुए डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर जी के अब तक प्रकाशित दोनों सजल-संग्रहों में संकलित सजलों का सांगोपांग अध्ययन करने एवं साहित्य विश्लेषण व गवेषणात्मक अनुशीलन के पश्चात् निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर जी की सजलों में नवगीत के सभी महत्वपूर्ण तत्व उपस्थित हैं। इन सजलों का भाव पक्ष उतना ही धारदार है जितना कि एक उत्तम कोटि के नवगीत का स्वीकार किया जाता है। ठीक उसी प्रकार इन सजलों का कला पक्ष भी उतना ही सटीक एवं पुष्ट दिखाई देता है, जितना कि नवगीत का। इस प्रकार स्पष्ट है कि डॉ. यायावर जी की सजलें नवगीत के सभी प्रमुख तत्वों से परिपूर्ण हैं।

संदर्भः-

१- मा. चंद्रदेव सिंह : पांच जोड़ बांसुरी ; पृष्ठ संख्या 10-11, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 9 अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता -27 ; प्रथम संस्करण : 1969 ई.

२- मा. कृष्ण कुमार श्कनकश : हिंदी गीत परंपरा में नवगीत : ष्नवगीत : जब गीत के बदले तेवरष, मा. नरेश साण्डिल्य : पृष्ठ संख्या 19, अविकल्प प्राण प्रकाशन, प्रज्ञा हिंदी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट, ष्कनक-निकुंजष, ठार मुरली नगर, गुंदाऊ, लाइन पार, फिरोजाबाद -283203; प्रथम संस्करण : 2021 ई.

३- मा. भारतेंदु मिश्र : नवगीत एकादश ; पृष्ठ संख्या 23, अयन प्रकाशन, 1/20, महरौली, नई दिल्ली-110030; प्रथम संस्करण : 1994 ई.

४- डॉ. शंभुनाथ सिंह : नवगीत अर्द्धशती ; पृष्ठ संख्या 6-7, पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली - 32; प्रथम संस्करण : 1985 ई.

५- मा. कृष्ण कुमार कनक : तीसरी आंख और सजल ; पृष्ठ संख्या 94-95, अविकल्प प्राण प्रकाशन, प्रज्ञा हिंदी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट, ष्कनक-निकुंजष, ठीक मुरली नगर, गुंदाऊ, लाइन पार, फिरोजाबाद - 283203; प्रथम संस्करण : 2023 ई.

६- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : तृषा का आचमन ; पृष्ठ संख्या 35, जवाहर पुस्तकालय, हिंदी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, मथुरा -281001; प्रथम संस्करण : 2017 ई.

७- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : तृषा का आचमन ; पृष्ठ संख्या 21, जवाहर पुस्तकालय, हिंदी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, मथुरा -281001; प्रथम संस्करण : 2017 ई.

८- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : तृषा का आचमन ; पृष्ठ संख्या 26, जवाहर पुस्तकालय, हिंदी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, मथुरा -281001; प्रथम संस्करण : 2017 ई.

९- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : तृषा का आचमन ; पृष्ठ संख्या 28, जवाहर पुस्तकालय, हिंदी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, मथुरा -281001; प्रथम संस्करण : 2017 ई.

१०- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : तृषा का आचमन ; पृष्ठ संख्या 43, जवाहर पुस्तकालय, हिंदी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, मथुरा -281001; प्रथम संस्करण : 2017 ई.

११- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : जलती रेतःदहकता मरुथल ; पृष्ठ संख्या 22, निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 37, षशिवराम कृपाष, विष्णु कॉलोनी, शाहगंज, आगरा-10 ; प्रथम संस्करण : 2021 ई.

१२- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : जलती रेतःदहकता मरुथल ; पृष्ठ संख्या 59, निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 37, षशिवराम कृपाष, विष्णु कॉलोनी, शाहगंज, आगरा-10 ; प्रथम संस्करण : 2021 ई.

१३- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : जलती रेतःदहकता मरुथल ; पृष्ठ संख्या 24, निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 37, षशिवराम कृपाष, विष्णु कॉलोनी, शाहगंज, आगरा-10 ; प्रथम संस्करण : 2021 ई.

१४- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : जलती रेतःदहकता मरुथल ; पृष्ठ संख्या 43, निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 37, षशिवराम कृपाष, विष्णु कॉलोनी, शाहगंज, आगरा-10 ; प्रथम संस्करण : 2021 ई.

१५- डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर : जलती रेतःदहकता मरुथल ; पृष्ठ संख्या 55, निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 37, षशिवराम कृपाष, विष्णु कॉलोनी, शाहगंज, आगरा-10 ; प्रथम संस्करण : 2021 ई.